व्रतोत्सव–पत्रिका

2024-25

श्री श्री कात्यायनी पीठ, वृन्दावन

卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐

श्री श्री कात्यायनी पीठ, वृन्दावन

श्री श्री कात्यायनी पीठ वृन्दावन, भगवती सती के 51 शक्ति पीठों में मुख्य पीठ जहाँ सती जी के केश गिरे थे

卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐

व्रतोत्सव-पत्रिका

राजा—मंगल

मन्त्री—शनि

सन्-२०२४-२०२५
वि.स.-२०८१ श्री काल नाम संवत्सर
शकाब्द-१९४६ बंगाब्द-१४३१

श्री श्री कात्यायनी पीठ

केशवाश्रम-राधाबाग, वृन्दावन - २८११२१

Tel. 0565-2442386, 8920984445
Website : www.katyayanipeeth.org.in
E-mail: katyayanipeeth@yahoo.com

"श्री कृष्ण की क्रीड़ाभूमि में माँ कात्यायनी पीठ"

वृन्दावन

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥

भारतीय संस्कृति जहाँ जो कुछ उत्तम एवं शुभ है उसका संग्रह करने वाली है। 'सर्वेषाम् विरोधेन ब्रह्मकर्म समार-भे' को वाणी प्रदान करने वाली है। संकुचित भावना से दूर त्याग, संयम, वैराग्य, सेवा, प्रेम, ज्ञान आदि से सुरभित वातावरण में पली भारतीय संस्कृति समस्त संस्कृतियों का श्रृंगार है। भारत की सांस्कृतिक चेतना मानवता के मन्दिर की अखण्ड ज्योति सी निरन्तर प्रज्वलित रही। जब भी यह ज्योति मन्द पड़ी, एक नवीन ज्योति ने अपना शुभ स्नेह दान कर उसमें प्राण फूंके। कितने वात्याचक आये और चले गये, किन्तु विश्व को शान्ति एवं सद्भाव का सन्देश देती हुई वह मंगल ज्योति निरन्तर जलती आ रही है। इसी श्रृंखला के अन्तर्गत भगवती कात्यायनी द्वारा नियुक्त महान् योगिराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी जी महाराज के परम सुयोग्य शिष्य योगीजी 1008 श्रीयुत् स्वामी केशवानन्द ब्रह्मचारी जी महाराज ने अपनी कठोर साधना द्वारा भगवती के प्रत्यक्ष आदेशानुसार इस लुप्त स्थान श्री कात्यायनी पीठ राधाबाग, वृन्दावन नामक पावनतम पवित्र स्थान का उद्धार किया।

अनन्तकाल से भारतवर्ष यथार्थ में पवित्र स्थानों, तीर्थों, सिद्धपीठों, मन्दिरों एवं देवालयों से सुसज्जित एवं सुशोभित रहा है। जिस पावन पवित्र भूमि में गंगा, यमुना, सरस्वती आदि नदियाँ एवं राम-कृष्ण आदि आराध्य देवों ने अवतार ग्रहण किया और अधर्म का नाश कर धर्म की रक्षा की, ऐसे सुन्दर पवित्रतम स्थानों को तीर्थ एवं सिद्धपीठ के नाम से पुकारा गया, जिनमें भगवान नन्दनन्दन अशरणशरण, करुणावरुणालय, ब्रजेन्द्र नन्दन श्री कृष्णचन्द्र की पावन पुण्यमय क्रीड़ाभूमि श्रीधाम वृन्दावन में कालिन्दी गिरिनन्दिनी सकल कल्मषहारिणी श्री यमुना के सन्निकट राधाबाग स्थित अति प्राचीन सिद्धपीठ के रूप में श्री श्री माँ कात्यायनी देवी विराजमान हैं।

भगवान श्री कृष्ण की क्रीड़ाभूमि श्रीधाम वृन्दावन में भगवती देवी के केश गिरे थे, इसका प्रमाण प्रायः सभी शास्त्रों में मिलता ही है। आर्य शास्त्र, ब्रह्मवैवर्त पुराण एवं आद्या स्तोत्र आदि कई स्थानों पर उल्लेख है "ब्रजे कात्यायनी परा" अर्थात् वृन्दावन स्थित पीठ में ब्रह्मशक्ति महामाया श्री माता कात्यायनी के नाम से प्रसिद्ध है। वृन्दावन स्थित श्री कात्यायनी पीठ भारतवर्ष के उन अज्ञात 108 एवं ज्ञात 51 पीठों में से एक अत्यन्त प्राचीन सिद्धपीठ है। देवर्षि श्री वेदव्यास जी ने श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध के बाईसवें अध्याय में उल्लेख किया है-

कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि।
नन्दगोपसुतं देवि पतिं मे कुरू ते नमः ॥

हे कात्यायनि ! हे महामाये ! हे महायोगिनि ! हे अधीश्वरि ! हे देवि ! नन्द गोप के राजकुमार श्री कृष्णचन्द्र को हमारा पति बना दीजिए। हम सब श्रद्धा सहित आपको प्रणाम करती हैं।

(जिस कन्या के विवाह में विलम्ब हो रहा हो तो वह कन्या माँ के स्वरूप का ध्यान कर उक्त मंत्र का एक माला जाप प्रतिदिन करे तो उसको सुन्दर और मनोनुकूल वर की प्राप्ति होती है।)

दुर्गा सप्तशती में देवी के अवतरित होने का उल्लेख इस प्रकार मिलता हैः

नन्दगोपगृहे जाता यशोदागर्भसम्भवा।

मैं नन्द गोप के घर में यशोदा के गर्भ से अवतार लूंगी। श्रीमद्भागवत् में भगवती कात्यायनी के पूजन द्वारा भगवान श्रीकृष्ण को प्राप्त करने के साधन का सुन्दर वर्णन प्राप्त होता है। यह व्रत पूरे मार्गशीर्ष (अगहन) के मास में होता है। भगवान श्रीकृष्ण को पाने की लालसा में ब्रजांगनाओं ने अपने हृदय की लालसा पूर्ण करने हेतु यमुना नदी के किनारे से घिरे हुए राधाबाग नामक स्थान पर श्री कात्यायनी देवी का पूजन किया।

ऐसे महान सिद्धपीठ का उद्धार क्या कोई साधारण व्यक्ति कर सकता है? जब तक उसे भगवती की कृपा प्राप्त न हो जाए। भगवती द्वारा नियुक्त पुत्र श्री केशवानन्द जी ने श्री कात्यायनी पीठ का पुनरुद्धार करने हेतु इस पृथ्वी पर जन्म लिया।

कामरूप मठ के स्वामी रामानन्द तीर्थ जी महाराज से दीक्षित होकर कठोर साधना के लिए हिमालय की कन्दराओं में गमन किया। साधनान्तर सर्वशक्तिशालिनी माँ के आदेशानुसार वृन्दावन स्थित अज्ञात सिद्धपीठ का उन्होंने पुनरुद्धार कराया। स्वामी केशवानन्द जी महाराज द्वारा 1 फरवरी, 1923 माघी पूर्णिमा के दिन बनारस, बंगाल तथा भारत के विभिन्न सुविख्यात प्रतिष्ठित वैदिक याज्ञिक ब्राह्मणों द्वारा वैष्णवीय परम्परा से मन्दिर की प्रतिष्ठा का कार्य पूर्ण कराया। माँ कात्यायनी के साथ-साथ पंचानन शिव, विष्णु, सूर्य तथा सिद्धिदाता श्री गणेश जी महाराज (जिनकी बात तो कुछ अलौकिक ही है "जिसने जाना उसने पाया" वाली कहावत चरितार्थ है) की मूर्तियों की भी इस मन्दिर में प्रतिष्ठा की गई।

राधा बाग मन्दिर के अन्तर्गत गुरु मन्दिर, शंकराचार्य मन्दिर, शिव मन्दिर, तथा सरस्वती मन्दिर भी दर्शनीय हैं। यहाँ की अलौकिकता का मुख्य कारण जहाँ साक्षात् माँ कात्यायनी सर्वशक्तिस्वरूपिणी दुःख-कष्टहारिणी, आन्नदमयी, करुणामयी अपनी अलौकिकता को लिए विराजमान हैं वहीं पर सिद्धिदाता श्री गणेश जी एवं बगीचे में अर्द्धनारीश्वर (गौरीशंकर महादेव) एक प्राण दो देह को धारण किए हुए विराजमान हैं। लोग उन्हें देखते ही मन्त्रमुग्ध हो जाते हैं।

शंकराचार्य मन्दिर में जहाँ विप्र वटुओं द्वारा वेद ध्वनि से सम्पूर्ण वेद विद्यालय एवं सम्पूर्ण कात्यायनी पीठ का प्रांगण पवित्र हो जाता है, वहीं कात्यायनी पीठ में स्थित औषधालय द्वारा विभिन्न असाध्य रोगियों का सफलतम उपचार तथा मन्दिर में स्थित गौशाला में गायों की सेवा-पूजा दर्शनीय है। इसके अतिरिक्त यज्ञशाला में वेदोक्तरीति से स्वाहाकार मन्त्रों का श्रवण एवं विभिन्न उपासना पद्धति द्वारा अर्चन को देखकर कोई व्यक्ति स्तम्भित होकर माँ के समक्ष पहुँच जाता है और सम्पूर्ण संसार को ही वो पलभर के लिए भूल जाता है। यही माँ कात्यायनी की कृपा शक्ति का फल है, जो कई बार दर्शन के बाद भी उसकी लालसा और जाग्रत् होती चली जाती है।

हरिद्वार

श्री स्वामी केशवानन्द जी महाराज को हिमालय में 37 वर्षो की घोर तपस्या के पश्चात् माँ भगवती ने आदेश दिया, तत्पश्चात् वे हरिद्वार के समीप कनखल में बेल्वाला जहाँ एक और चण्डी पर्वत, नीलधारा तथा दूसरी ओर मनसा देवी व हरकी पौड़ी से बहती हुई भागीरथी गंगा व मनसा देवी के बीच, टापू पर ये तप करने आए।

उस समय वहाँ सर्पों और बिच्छुओं से भरा घोर जंगल था। उस समय श्री स्वामी जी के पास केवल एक कमंडल और चिमटा था। 1903 में अंग्रेजों का राज्य था। उस समय हरिद्वार के लाट साहब (राज्यपाल) डाक बंगले में ठहरा करते थे, वहाँ से वे स्वामी जी के दर्शन करने आते थे। श्री स्वामी जी तपस्या में लीन रहते थे। कभी-कभी वे श्री स्वामी जी से वार्तालाप करने रुक जाते थे। राज्यपाल श्री स्वामी जी के तेज और अंग्रेजी में वार्तालाप से बहुत प्रभावित हुए। एक दिन उन्होंने श्री स्वामी जी से कहा कि मैं आपकी सेवा करना चाहता हूँ, इस पर श्री स्वामी जी ने कहा कि कुछ ऐसी व्यवस्था कर दीजिए कि हमें यहाँ कुटिया में भजन व साधना करनें में कभी कोई परेशानी नहीं हो। तभी से यह भूमि उनके और अब उनके द्वारा बनाए गए ट्रस्ट के पास पट्टे पर है।

इस भूमि को प्राप्त करने के बाद श्री स्वामी जी ने स्वयं गंगा नदी में तैर कर और फिर नाव से एक-एक पत्थर एकत्रित कर गुफाएँ तथा चबूतरे का निर्माण किया। यह चबूतरा 30x40 फीट का है और लगभग 6 फीट ऊँचाई का है। इसी चबूतरे पर श्री स्वामी केशवानन्द जी महाराज ने अपने योग-गुरु श्रीयुत् श्यामाचरण लाहिड़ी जी महाराज की स्मृति का समाधि मन्दिर और श्री श्यामेश्वर महादेव का मन्दिर स्थापित किया। कुछ समय बाद यहाँ एक भव्य आश्रम भी बनवाया। अब यह आश्रम केशवाश्रम के नाम से प्रसिद्ध है। चबूतरे के नीचे पूजा एवं ध्यान करने हेतु गुफाएँ भी बनाई गई, जिनमें योगीजन तपस्या कर सकें।

स्वामी केशवानन्द जी महाराज द्वारा हरिद्वार में स्थापित केशवाश्रम

आश्रम की भूमि में पंचवटी समान एक बगीचा है, जिसमें आँवला, अशोक, रुद्राक्ष, आम, जामुन और कई अन्य दिव्य वृक्ष हैं। ये वृक्ष वातावरण में दिव्य और सौम्य महक फैलाते हैं। चारों ओर गंगा की निर्मल धारा और पर्वतों के बीच यह आश्रम एक अत्यन्त रमणीय स्थान है। एक ओर पर्वत पर चण्डी देवी का मन्दिर तथा दूसरी ओर पर्वत पर मनसा देवी का मन्दिर, इस स्थान की दिव्यता को बढ़ाते हैं।

वर्तमान ट्रस्ट ने इस आश्रम के भवन व बगीचे को और भी अधिक रमणीय बनाया है। श्री श्यामेश्वर महादेव जी के मन्दिर के नीचे की गुफाओं को भी पुनः ठीक कराया गया है।

केशवाश्रम हरिद्वार में पूरे वर्ष भक्तगण दर्शन हेतु आते हैं और यहाँ के दिव्य वातावरण से ओत-प्रोत होकर जाते हैं। प्रतिदिन की पूजा-आरती के अलावा अन्य धार्मिक आयोजन भी होते हैं। इनमें से विशेष हैं - श्री श्यामेश्वर महादेव जी का रुद्राभिषेक, चण्डी-पाठ, पूज्य दण्डी स्वामियों एवं ब्राह्मणों की सेवा इत्यादि। गंगा-दशहरा और महाशिवरात्रि के पर्वो पर भी विशेष पूजाओं का आयोजन होता है।

श्री श्री कात्यायनी पीठ वृन्दावन में समयोचित पूजा महोत्सव आदि अनवरत रूप से विधिपूर्वक होते रहते हैं। भक्तों एवं दर्शनार्थियों की सुविधा हेतु प्रतिवर्ष की भांति नववर्ष व्रतोत्सव पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। माँ के चरणों में समर्पित करते हुए एवं सभी की मंगल कामना के साथ.....जय जय माँ कात्यायनी।

09 अप्रैल, 2024 (कात्यायनी ट्रस्ट)

वागीशाद्याः सुमनसः सर्वार्थनामुपक्रमे ।
यं नत्वा कृतकृतयाः स्युः तं नमामि गजाननम् ।।

श्री सिद्ध गणेश

श्री श्री कात्यायनी पीठ वृन्दावन में स्थित गणपति महाराज की मूर्ति का भी विचित्र इतिहास है। एक अंग्रेज श्री डब्ल्यू.आर. यूल कलकत्ता में मैसर्स एलटस ऐंशोरेन्स कम्पनी लि. जो नं.4 क्लाइव रोड पर है, में ईस्टर्न सेक्रेटरी के पद पर कार्य करते थे। इनकी पत्नी श्रीमती यूल ने कोई सन् 1911 या 1912 में जबकि वह विलायत जा रही थी, जयपुर से एक गणपति महाराज की मूर्ति खरीदी। वह अपने पति को कलकत्ता छोड़कर इंग्लैण्ड चली गईं तथा उन्होंने अपनी बैठक में कारनेस पर गणपति जी की प्रतिमा सजा दी। एक दिन श्रीमती यूल के घर भोज हुआ तथा उनके मित्रगणों ने गणेश जी की प्रतिमा को देखकर उनसे पूछा यह क्या है? श्रीमती यूल ने उत्तर दिया "यह हिन्दुओं का सूँड़वाला देवता है। उनके मित्रों ने गणेश जी की मूर्ति को बीच की मेज पर रखकर उपहास करना आरम्भ किया। किसी ने गणपति जी के मुख के पास चम्मच लगाकर पूछा, इनका मुँह कहाँ है। जब भोज समाप्त हो गया तब रात्रि में श्रीमती यूल की पुत्री को ज्वर हो गया जो रात्रि में बड़े वेग से बढ़ गया। वह अपने तेज ज्वर में चिल्लाने लगी, हाय मेरा सूँड़वाला खिलौना मुझे निगलने आ रहा है। डाक्टरों ने सोचा कि वह विस्मृति में बोल रही है, किन्तु वह रात-दिन यही शब्द दोहराती रही एवं अत्यन्त भयभीत हो गई। श्रीमती यूल ने यह सब वृतान्त अपने पति को कलकत्ता लिखकर भेजा। उनकी पुत्री को किसी भी औषधि से लाभ नहीं हुआ। एक दिन श्रीमती यूल ने स्वप्न में देखा कि वह अपने बाग के अतिथिगृह में बैठी है। सूर्यास्त हो रहा है, अचानक एक नग्न पुरुष जिसके घुँघराले बाल, मशाल सी जलती आँख, हाथ में भाला लिए, वृषभ पर सवार बढ़ते हुए अन्धकार से उसकी ओर आ रहा है एवं कह रहा है, "मेरे पुत्र सूँड़ वाले देवता को तत्काल भारत भेज दो अन्यथा मैं तुम्हारे सारे परिवार का नाश कर दूँगा। वह अत्यधिक भयभीत होकर जाग उठी और दूसरे दिन प्रातः ही उन्होंने उस खिलौने को पार्सल बनवाकर पहली डाक से ही अपने

पति के पास भारत भेज दिया। जहाँ वह देवता गार्डन हेंडरसन के कार्यालय में तीन दिन तक रहे। वहाँ शीघ्र ही कलकत्ता के नर-नारियों की सिद्ध गणेश के दर्शनार्थ कार्यालय में भीड़ लग गई। कार्यालय का सारा कार्य रुक गया। श्री यूल ने अपने अधीन ऐंशोरेन्स एजेण्ट केदार बाबू से पूछा कि इस देवता का क्या करना चाहिए। अन्त में केदार बाबू गणेश जी को अपने घर 7, अभय चरण मित्र स्ट्रीट ले गए एवं वहाँ उनकी पूजा शुरू कर दी। तब से सब भक्तों ने केदार बाबू के घर पर जाना आरम्भ कर दिया।

इधर वृन्दावन में स्वामी केशवानन्द जी महाराज कात्यायनी देवी की पंचायतन पूजन विधि से प्रतिष्ठा के लिए सनातन धर्म की पाँच प्रमुख मूर्तियों का प्रबन्ध कर रहे थे। श्री श्री कात्यायनी देवी की अष्टधातु से निर्मित मूर्ति कलकत्ता में तैयार हो रही थी तथा भैरव चन्द्रशेखर की मूर्ति जयपुर में बनाई गई थी, जबकि महाराज गणेश जी की प्रतिमा के विषय में विचार कर रहे थे, तभी उन्हें माँ का आदेश हुआ कि एक सिद्ध गणेश कलकत्ता में केदार बाबू के घर में हैं। जब तुम कलकत्ता से प्रतिमा लाओगे तब मेरे साथ मेरे पुत्र को भी लाना। अतः जब श्री स्वामी केशवानन्द जी श्री श्री कात्यायनी माँ की अष्टधातु की मूर्ति पसन्द करके लाने के लिए कलकत्ता गए तब केदार बाबू ने उनके पास आकर कहा गुरुदेव मैं आपके पास वृन्दावन आने का विचार कर रहा था।

मै बड़ी विपत्ति में हूँ। मेरे पास पिछले कुछ दिनों से गणेश जी की एक प्रतिमा है। प्रतिदिन रात्रि में स्वप्न में वह मुझसे कहते हैं कि जब श्री श्री कात्यायनी माँ की मूर्ति वृन्दावन जाएगी तो मुझे भी वहाँ भेज देना। कृपया आप स्वीकार करें। गुरुदेव ने कहा "बहुत अच्छा, तुम वह मूर्ति स्टेशन पर ले आना, मैं तूफान से जाऊँगा। जब माँ जाएँगी तो उनका पुत्र भी उनके साथ जाएगा।"

अतः जब श्री श्री स्वामी केशवानन्द जी महाराज श्री श्री कात्यायनी देवी की अष्टधातु की अत्यन्त ही सुन्दर प्रतिमा लेकर कलकत्ता से वापस आ रहे थे, केदार बाबू ने स्टेशन आकर गुरुदेव को गणेश जी की प्रतिमा दे दी। वह सिद्ध गणेश इन महान योगी द्वारा श्री श्री कात्यायनी पीठ में प्रतिष्ठित किए गए हैं। इनकी स्थापना के कुछ काल बाद से ही इस अद्भुत देवता की कई आश्चर्यजनक घटनाएँ घटीं, जो कि यदि लिपिबद्ध की जाएँ तो एक पूरा ग्रन्थ ही बन जाए।

श्री श्री कात्यायनी पीठ के पीठाधीश्वर
एक संक्षिप्त परिचय

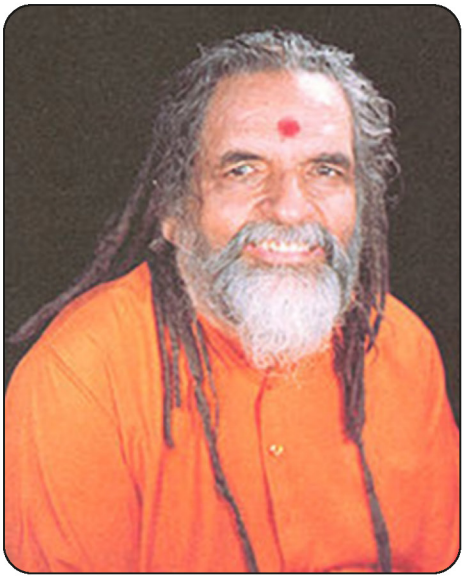

स्वामी श्री विद्यानन्द जी महाराज

"सन्त हृदय नवनीत समाना" गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्री रामचरित मानस में सन्तों का वर्णन करते समय उनके हृदय एवं उनके स्वभाव का वर्णन किया है कि सन्तों का हृदय मक्खन के समान कोमल होता है। योगिराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी जी के सुयोग्य शिष्य श्री केशवानन्द ब्रह्मचारी जी ने स्वामी श्री रामानन्द तीर्थ जी महाराज से गेरूआ वस्त्र तथा ब्रह्मचर्य की दीक्षा ग्रहण कर कठोर साधना को प्राप्त किया। लाहिड़ी जी द्वारा योग क्रिया का अभ्यास कर हिमालय में समाधि द्वारा साधना की प्राप्ति तथा विभिन्न क्रियायोगों का अभ्यास किया गया। हिमालय में उन्होंने अनेक साधु-सन्तों के दर्शन किए। वहाँ पर उन्हें कात्यायनी माँ ने आदेश दिया। वृन्दावन में आकर अपने योग शक्ति द्वारा उस अज्ञात स्थान को प्राप्त किया जहाँ आज माँ कात्यायनी देवी विराजमान हैं। स्वामी केशवानन्द जी महाराज ने सत्यानन्द जी को अपना शिष्य

बनाया, परन्तु वे अधिक दिनों तक नहीं रह पाए और माँ के चरणों में लीन हो गए। उस समय स्वामी नित्यानन्द जी महाराज विद्यमान थे। उन्होंने भी स्वामी केशवानन्द जी महाराज से दीक्षा ग्रहण की। स्वामी नित्यानन्द जी महाराज माँ की सेवा अनन्य भक्ति से किया करते थे। स्वामी श्री केशवानन्द जी महाराज के परम भक्त श्री विश्वम्भर दयाल जी और उनकी पत्नी श्रीमती रामाप्यारी देवी जी, जो प्रतिदिन महाराज के दर्शन करने आया करते थे "माँ" की भक्ति के साथ-साथ गुरू महाराज स्वामी श्री केशवानन्द जी महाराज के भी कृपापात्र हो गए। श्री विश्वम्भर दयाल जी के छह पुत्र थे, इन छहों पुत्रों पर महाराज का आशीर्वाद सदा विद्यमान रहा, परन्तु चतुर्थ पुत्र पर उनकी कृपादृष्टि अत्यधिक रही और विधुभूषण नामक बालक आज स्वामी विद्यानन्द जी महाराज के नाम से जाने जाते हैं। स्वामी विद्यानन्द जी महाराज का जन्म 26 दिसम्बर, 1935 को वृंदावन में हुआ। बाल्यकाल में शिक्षा दीक्षा से ओत-प्रोत होकर स्वामी नित्यानन्द जी महाराज द्वारा उनका यज्ञोपवीत संस्कार कराया गया।

सन् 1954 अक्षय तृतीया से माँ की पूजा अर्चना करते रहे। स्वभाव से वे अत्यन्त सरल और कर्मशील माने जाते थे। बालकों के साथ बालक हो जाना, यह उनका स्वभाव था। पण्डितों और विद्वानों का आदर करना एवं सम्मानीय लोगों का सम्मान करना इनका स्वभाव था। कैसा भी व्यक्ति क्यों न आए वह इनके स्वभाव से नतमस्तक होकर जाता था। आखिर क्यों न हो जिस पर गुरु कृपा एवं "माँ" की कृपा सदा विद्यमान थी। आपके सरल स्वभाव को देखकर सभी लोग मन्त्रमुग्ध हो जाते थे आपके सम्पर्क में जो भी व्यक्ति आता था वह उनके वात्सल्यमय व्यवहार को पाकर गद्‌गद् हो जाता था। यही अलौकिक स्थान का महत्व, गुरु महाराज की कृपा तथा "माँ" की कृपा का फल था। श्री श्री कात्यायनी पीठ का नाम सम्पूर्ण देश विदेश में व्याप्त हो रहा है, जो व्यक्ति एक बार "माँ" के दर्शन कर गुरु देवों से आशीर्वाद ग्रहण करता है उसकी सभी मनोकामनाएँ निश्चित ही पूर्ण होती हैं।

स्वामी श्री विद्यानन्द जी 7 अप्रैल 2021 को ब्रह्मलीन हुए।

कात्यायनी ट्रस्ट के ट्रस्टी

श्री विष्णु प्रकाश	प्रधान
श्रीमती रीता मेनन	उप प्रधान
श्री रवि दयाल	सचिव
श्री के.एल. बंसल	सह उपाध्यक्ष एवं कोषाध्यक्ष
श्री अशोक नारायण	ट्रस्टी
श्री नरेश दयाल	ट्रस्टी
श्रीमती कुक्कू माथुर	ट्रस्टी
श्री ऋषि दयाल	ट्रस्टी
श्री दीपक सहाय	ट्रस्टी
श्री नरेन्द्र गोहिल	ट्रस्टी
श्री संजय बहादुर	ट्रस्टी
श्री अजय बहादुर माथुर	ट्रस्टी
श्री राजेश डी माथुर	ट्रस्टी
श्री अखिल जिंदल	ट्रस्टी
श्री इन्दू प्रकाश सहाय	ट्रस्टी
श्री अशोक दयाल	ट्रस्टी
श्री सिद्धार्थ सहाय	ट्रस्टी

चैत्र–शुक्ल–पक्ष संवत् 2081

9 अप्रैल 2024 से 23 अप्रैल 2024 तक

9.4.2024	मंगलवार	प्रतिपदा	चैत्र वासन्तिक नवरात्रि व्रत प्रारम्भ, श्री काल नाम संवत्सर प्रारम्भ, श्री दुर्गा सप्तशती पाठारम्भ, शतचण्डी महायज्ञ प्रारम्भ, प्रातः पूजा आरती पाठ परायण।
10.4.2024	बुधवार	द्वितीया	प्रातः पूजा आरती, पाठ पारायण, सर्वार्थ सिद्धि योग।
11.4.2024	गुरुवार	तृतीया	प्रातः पूजा आरती, पाठ व परायण, गण गौरी पूजा, श्री मत्स्य जयन्ती।
12.4.2024	शुक्रवार	चतुर्थी	प्रातः पूजा आरती, पाठ पारायण। श्री गणेश चतुर्थी।
13.3.2024	शनिवार	पंचमी	प्रातः पूजा आरती, पाठ पारायण श्री पंचमी, मेष संक्रान्ति, चड़ पूजा
14.4.2024	रविवार	षष्ठी	प्रातः पूजा आरती, पाठ परायण, माँ कात्यायनी पूजा, सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग, बंग्ला पहला बैशाक
15.4.2024	सोमवार	सप्तमी	प्रातः पूजा आरती, पाठ पारायण।
16.4.2024	मंगलवार	अष्टमी	प्रातः पूजा आरती पाठ पारायण, श्री दुर्गाअष्टमी।

सन्धि-पूजा-विशेष आरती
दिनांक-16.04.2024 मंगलवार अपरान्ह 4:04 P.M.

17.4.2024	बुधवार	नवमी	प्रातः पूजा आरती, हवन, शतचण्डी महायज्ञ समापन, कुमारी पूजन, पूर्णाहूति, श्री राम नवमी व्रत पूजा, श्री दुर्गा नवमी, सर्वार्थ सिद्धियोग,

अमृत गुरु पुष्य योग, ब्राह्मण साधु सेवा

18.4.2024	गुरूवार	दशमी	
19.4.2024	शुक्रवार	एकादशी	कामदा एकादशी व्रत सर्वेषाम्
20.4.2024	शनिवार	द्वादशी	ग्रीष्म ऋतु प्रा. विष्णु द्वादशी
21.4.2024	रविवार	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत, योगीराज स्वामी श्री नित्यानन्द जी महाराज का 66वां महातिरोधान महोत्सव,
22.4.2024	सोमवार	चतुर्दशी	
23.4.2024	मंगलवार	पूर्णिमा	पूर्णिमा व्रत श्री हनुमान जयन्ती,"माँ कात्यायनी शीतल भोग पूजा प्रारम्भ",

यह विशेष पूजा सम्पूर्ण वैशाख में मनायी जाती है, आज दिनांक 23.4.24 मंगलवार पूर्णिमा से प्रारम्भ होकर आगामी मास 23.05.24 (वैशाखी पूर्णिमा) तक इस उत्सव में प्रतिदिन श्री श्री कात्यायनी माँ तथा श्री नारायणजी की विशेष सुभाषित सुगन्धित पुष्पों एवं अन्य अभ्यंगों द्वारा विशेष अर्चन, ऋतु फल भोग तथा श्री चन्द्रशेखर महादेवजी की जलधारा एवं संध्या में शीतल भोग का विशेष आयोजन किया जाता है। वैशाख स्नान प्रारम्भ

वैशाख–कृष्ण–पक्ष संवत् 2081

24 अप्रैल 2024 से 8 मई 2024 तक

24.4.2024	शुक्रवार	प्रतिपदा	
25.4.2024	गुरूवार	प्रतिपदा	सर्वार्थ सिद्धि योग
26.4.2024	शुक्रवार	द्वितीया	
27.4.2024	शनिवार	तृतीया	चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय रात्रि 10.19 P.M)
28.4.2024	रविवार	चतुर्थी	सर्वार्थ सिद्धि योग
29.4.2024	सोमवार	पंचमी	
30.4.2024	मंगलवार	षष्ठी	
30.4.2024	मंगलवार	सप्तमी	क्षय
1.5.2024	बुधवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी,शीतला पूजा
2.5.2024	गुरूवार	नवमी	सर्वार्थ सिद्धि योग।
3.5.2024	शुक्रवार	दशमी	
4.5.2024	शनिवार	एकादशी	बरूथिनी एकादशी व्रत सर्वेषाम्, श्री वल्लभाचार्य जयन्ती
5.5.2024	रविवार	द्वादशी	प्रदोष व्रत, सर्वार्थ सिद्धि योग
6.4.2024	सोमवार	त्रयोदशी	
7.5.2024	मंगलवार	चतुर्दशी	पितृ कार्ये अमावस्या सर्वाथ अमृत सिद्धि योग
8.5.2024	बुधवार	अमावस्या	देवकार्ये अमावस्या, श्री शुक्रदेव जयन्ती, सर्वार्थ सिद्धि योग

वैशाख–शुक्ल–पक्ष संवत् 2081

9 मई 2024 से 23 मई 2024 तक

9.5.2024	गुरूवार	प्रतिपदा	
9.5.2024	गुरूवार	द्वितीया	क्षय
10.5.2024	शुक्रवार	तृतीया	अक्षय तृतीया, श्री बांके बिहारी जी के चरण दर्शन श्री परशुराम जयन्ती
11.5.2024	शनिवार	चतुर्थी	
12.5.2024	रविवार	पंचमी	श्री शंकराचार्य जयन्ती, श्री सूरदास जयन्ती
13.5.2024	सोमवार	षष्ठी	सर्वार्थ सिद्धि योग
14.5.2024	मंगलवार	सप्तमी	वृष संक्रान्ति
15.5.2024	बुधवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी, श्री
16.5.2024	गुरूवार	अष्टमी	श्री बगुलामुखी जयन्ती
17.5.2024	शुक्रवार	नवमी	
18.5.2024	शनिवार	दशमी	
19.5.2024	रविवार	एकादशी	श्री मोहिनी एकादशी व्रत सर्वेषाम्
20.5.2024	सोमवार	द्वादशी	प्रदोषव्रत
21.5.2024	मंगलवार	त्रयोदशी	श्री नृसिंह जयन्ती
22.5.2024	बुधवार	चतुर्दशी	श्री कूर्म जयन्ती
23.5.2024	गुरूवार	पूर्णिमा	पूर्णिमाव्रत, श्री बुद्ध जयन्ती, श्री राधारमण जयन्ती, वैशाख स्नान पूर्ण शीतल भोग, पूजा उत्सव समापन

ज्येष्ठ–कृष्ण–पक्ष संवत् 2081

24 मई 2024 से 6 जून 2024 तक

24.5.2024	शुक्रवार	प्रतिपदा	
25.5.2024	शनिवार	द्वितीया	
26.5.2024	रविवार	तृतीया	चतुर्थी (चन्द्रोदय रात्रि 10.9P.M)
27.5.2024	सोमवार	चतुर्थी	
28.5.2024	मंगलवार	पंचमी	
29.5.2024	बुधवार	षष्ठी	
30.5.2024	गुरूवार	सप्तमी	सर्वार्थ सिद्धि योग
31.5.2024	शुक्रवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी
1.6.2024	शनिवार	नवमी	
1.6.2024	शनिवार	दशमी	क्षय
2.6.2024	रविवार	एकादशी	अपरा एकादशी व्रत स्मार्त
3.6.2024	सोमवार	द्वादशी	अपरा एकादशी व्रत वैष्णव, सर्वार्थ सिद्धि योग
4.6.2024	मंगलवार	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
5.6.2024	बुधवार	चतुर्दशी	सर्वार्थ सिद्धि योग
6.6.2024	गुरूवार	अमावस्या	देव पितृकार्ये अमावस्या, वट सावित्री, पूजा, शनि जयन्ती

ज्येष्ठ–शुक्ल–पक्ष संवत् 2081

7 जून 2024 से 22 जून 2024 तक

7.6.2024	शुक्रवार	प्रतिपदा	
8.6.2024	शनिवार	द्वितीया	
9.6.2024	रविवार	तृतीया	सर्वार्थ सिद्धि अमृत सिद्धि योग, रवि पुष्य
10.6.2024	सोमवार	चतुर्थी	सर्वार्थ सिद्धि योग
11.6.2024	मंगलवार	पंचमी	
12.6.2024	बुधवार	षष्ठी	सर्वार्थ सिद्धि अमृत सिद्धि योग, अरण्य षष्ठी, श्री विन्ध्यवासिनी पूजा जमाई षष्ठी
13.6.2024	गुरूवार	सप्तमी	
14.6.2024	शुक्रवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी, मिथुन संक्रान्ति
15.6.2024	शनिवार	नवमी	
16.6.2024	रविवार	दशमी	श्री गंगा दशहरा, गंगाजी स्नान, श्री केशवाश्रम हरिद्वार, श्री बटुक भैरव जयन्ती
17.6.2024	सोमवार	एकादशी	निर्जला एकादशी स्मार्त
18.6.2024	मंगलवार	एकादशी	निर्जला एकादशी व्रत वैष्णव
19.6.2024	बुधवार	द्वादशी	प्रदोष व्रत, सवार्थ अमृत सिद्धि योग
20.6.2024	गुरूवार	त्रयोदशी	सर्वार्थ सिद्धियोग, रवि दक्षिणायन वर्षा ऋतु प्रारंभ
21.6.2024	शुक्रवार	चतुर्दशी	पूर्णिमा व्रत
22.6.2024	शनिवार	पूर्णिमा	श्री जगन्नाथ जी स्नान यात्रा, अम्बूवाची पूजा प्रारंभ

आषाढ़—कृष्ण—पक्ष संवत् 2081

23 जून 2024 से 5 जुलाई 2024 तक

23.6.2024	शनिवार	प्रतिपदा	क्षय
23.6.2024	रविवार	द्वितीया	सर्वार्थ सिद्धि योग
24.6.2024	सोमवार	तृतीया	सर्वार्थ सिद्धि योग
25.6.2024	मंगलवार	चतुर्थी	चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय रात्रि 10.26PM) अम्बूवाची पूजा समापन
26.6.2024	बुधवार	पंचमी	
27.6.2024	गुरूवार	षष्ठी	
28.6.2024	शुक्रवार	सप्तमी	
29.6.2024	शनिवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी
30.6.2024	रविवार	नवमी	सर्वार्थ सिद्धि योग
1.7.2023	सोमवार	दशमी	
2.7.2024	मंगलवार	एकादशी	योगिनी एकादशी व्रत सर्वेषाम्, सर्वार्थ सिद्धि योग
3.7.2024	बुधवार	द्वादशी	प्रदोष व्रत
4.7.2024	गुरूवार	त्रयोदशी	
4.7.2024	गुरूवार	चतुर्दशी	क्षय
5.7.2024	शुक्रवार	अमावस्या	देवपितृकार्ये अमावस्या

आषाढ़–शुक्ल–पक्ष संवत् 2081

6 जुलाई 2024 से 21 जुलाई 2024 तक

6.7.2024	शनिवार	प्रतिपदा	गुप्त नवरात्रि व्रत विधान प्रारम्भ
7.7.2024	रविवार	द्वितीया	श्री जगन्नाथ जी रथ यात्रा पुरी, रवि पुष्य
8.7.2024	सोमवार	तृतीया	सर्वार्थ सिद्धि योग
9.7.2024	मंगलवार	तृतीया	सर्वार्थ सिद्धि योग
10.7.2024	बुधवार	चतुर्थी	
11.7.2024	गुरूवार	पंचमी	
12.7.2024	शुक्रवार	षष्ठी	सर्वार्थ सिद्धि योग
13.7.2024	शनिवार	सप्तमी	
14.7.2024	रविवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी
15.7.2024	सोमवार	नवमी	नवमी (गुप्त नवरात्रि व्रत विधान समापन)
16.7.2024	मंगलवार	दशमी	कर्क संक्रान्ति
17.7.2024	बुधवार	एकादशी	देवशक्ति एकादशीव्रत स्मार्त, सर्वार्थ सिद्धि योग
18.7.2024	गुरूवार	द्वादशी	चातुर्मास विधान प्रारंभ, विष्णुशयनोत्सव
19.7.2024	शुक्रवार	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
20.7.2024	शनिवार	चतुर्दशी	पूर्णिमा व्रत, सन्यासी चतुर्मास जल विधान प्रारम्भ
21.7.2024	रविवार	पूर्णिमा	पूर्णिमा, श्री गुरु पूर्णिमा, श्री श्री कात्यायनी पीठ के श्री गुरुमन्दिर में विशेष गुरु पूजा आरती, वेद पाठ, श्री गोवर्धन परिक्रमा, व्यास पीठ पूजा, सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रथम श्रावण–कृष्ण–पक्ष संवत् 2081

22 जुलाई 2024 से 4 अगस्त 2024 तक

22.7.2024	सोमवार	प्रतिपदा	सर्वार्थ सिद्धि योग
23.7.2024	मंगलवार	द्वितीया	
24.7.2024	बुधवार	तृतीया	चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय रात्रि 9.38 P.M)
24.7.2024	बुधवार	चतुर्थी	क्षय
25.7.2024	गुरुवार	पंचमी	
26.7.2024	शुक्रवार	षष्ठी	सर्वार्थ अमृत सिद्धि योग
27.7.2024	शनिवार	सप्तमी	
28.7.2024	रविवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी सर्वार्थ सिद्धि योग
29.7.2024	सोमवार	नवमी	श्रावण सोमवार
30.7.2024	मंगलवार	दशमी	सर्वार्थ सिद्धि योग
31.7.2024	बुधवार	एकादशी	कामदा एकादशी व्रत सर्वेषाम्
1.8.2024	गुरुवार	द्वादशी	प्रदोष व्रत
2.8.2024	शुक्रवार	त्रयोदशी	सर्वार्थ सिद्धि योग
3.8.2024	शनिवार	चतुर्दशी	
4.8.2024	रविवार	अमावस्या	अमावस्या, देवपितृकार्ये, हरियाली अमावास्या रवि पुष्य

श्रावण–शुक्ल–पक्ष–संवत् 2081

5 अगस्त 2024 से 19 अगस्त 2024 तक

5.8.2024	सोमवार	प्रतिपदा	श्रावण सोमवार व्रत
6.8.2024	मंगलवार	द्वितीया	
7.8.2024	बुधवार	तृतीया	हरियाली तीज, श्री बाँके बिहारी जी के मन्दिर में विशेष झूला दर्शन
8.8.2024	रविवार	चतुर्थी	विनायक चतुर्थी व्रत
9.8.2024	शुक्रवार	पंचमी	नागपंचमी
10.8.2024	शनिवार	षष्ठी	सर्वार्थ सिद्धि योग
11.8.2024	रविवार	सप्तमी	श्री तुलसीदास जयन्ती,
12.8.2024	सोमवार	सप्तमी	श्रावण सोमवार व्रत
13.8.2024	मंगलवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी, पूज्यनीया श्री रानी माँ का 57वाँ महातिरोधान उत्सव
14.8.2024	बुधवार	नवमी	सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग
15.8.2024	गुरूवार	दशमी	
16.8.2024	शुक्रवार	एकादशी	पवित्रा एकादशी व्रत सर्वेषाम्, झूला महोत्सव प्रारंभ, सिंह संक्रान्ति
17.8.2024	शनिवार	द्वादशी	श्रावण, प्रदोष व्रत
17.8.2024	शनिवार	त्रयोदशी	क्षय
18.8.2024	रविवार	चतुर्दशी	सर्वार्थ सिद्धि योग
19.8.2024	सोमवार	पूर्णिमा	श्री श्री कात्यायनी पीठ में राखीधारणोत्सव, श्रावणी कर्म, झूलामहोत्सव समापन पूर्णिमा व्रत सर्वार्थ सिद्धि योग

भाद्रपद–कृष्ण–पक्ष–संवत् 2081

20 अगस्त 2024 से 3 सितम्बर 2024 तक

20.8.2024	मंगलवार	प्रतिपदा	
21.8.2024	बुधवार	द्वितीया	कज्जली तीज (चन्द्रोदय रात्रि 8.25 P.M)
22.8.2024	गुरूवार	तृतीया	बहुला चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय रात्रि 9.01 P.M)
23.8.2024	शुक्रवार	चतुर्थी	
24.8.2024	शनिवार	पंचमी	
24.8.2024	शनिवार	षष्ठी	क्षय
25.8.2024	रविवार	सप्तमी	श्री कृष्ण जन्माष्टमी स्मार्त
26.8.2024	सोमवार	अष्टमी	श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत वैष्णव, श्री दुर्गा अष्टमी
27.8.2024	मंगलवार	नवमी	गंगाा नवमी, नन्द महोत्सव
28.8.2024	बुधवार	दशमी	सर्वार्थ सिद्ध योग
29.8.2024	गुरूवार	एकादशी	जया एकादशी व्रत सर्वेषाम्, सर्वार्थ सिद्धि योग, मेला
30.8.2024	शुक्रवार	द्वादशी	सर्वार्थ सिद्धि योग, अजा एकादशी व्रत वैष्णव
31.8.2024	शनिवार	त्रयोदशी	शनि प्रदोष व्रत
1.9.2024	रविवार	चतुर्दशी	
2.9.2024	सोमवार	अमावस्या	कुशोत्पाटिनी अमावस्या, पितृकार्ये अमा.
3.9.2024	मंगलवार	अमावस्या	देवकार्ये अमावस्या

भाद्रपद– शुक्ल–पक्ष–संवत् 2081

4 सितम्बर 2024 से 18 सितम्बर 2024 तक

4.9.2024	बुधवार	प्रतिपदा	सर्वार्थ सिद्धि योग
5.9.2024	गुरूवार	द्वितीया	
6.9.2024	शुक्रवार	तृतीया	(तीज) हरितालिका व्रत।
7.9.2024	शनिवार	चतुर्थी	श्री गणेश जयन्ती, श्री श्री कात्यायनी पीठ में श्री गणपति देव जी की विशेष पूजा महोत्सव, सवार्थ सिद्धि योग
8.9.2024	रविवार	पंचमी	ऋषि पंचमी
9.9.2024	सोमवार	षष्ठी	श्री बल्देव छठ, श्री सूर्य षष्ठी, सर्वार्थ सिद्धि योग
10.9.2024	मंगलवार	सप्तमी	
11.9.2024	बुधवार	अष्टमी	श्री राधा अष्टमी, श्री दुर्गा अष्टमी
12.9.2024	गुरूवार	नवमी	श्री भागवत जयन्ती
13.9.2024	शुक्रवार	दशमी	
14.9.2024	शनिवार	एकादशी	पद्मा एकादशी व्रत सर्वेषाम्, सर्वार्थ सिद्धि योग
15.9.2024	रविवार	द्वादशी	श्री वामन जयन्ती, प्रदोष व्रत
16.9.2024	सोमवार	त्रयोदशी	कन्या संक्रान्ति
17.9.2024	मंगलवार	चतुर्दशी	अनन्त चतुर्दशी व्रत, पूर्णिमा व्रत
18.9.2024	बुधवार	पूर्णिमा	सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग, श्राद्ध पक्ष, प्रारम्भ, पूर्णिमा श्राद्ध, प्रतिपदा श्राद्ध

आश्विन– कृष्ण–पक्ष–संवत् 2081

19 सितम्बर 2024 से 2 अक्टूबर 2024 तक

18.9.2024	बुधवार	प्रतिपदा	क्षय
19.9.2024	गुरूवार	द्वितीया	द्वितीया श्राद्ध, सर्वार्थ सिद्धि योग
20.9.2024	शुक्रवार	तृतीया	तृतीया श्राद्ध
21.9.2024	शनिवार	चतुर्थी	चतुर्थी श्राद्ध, चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय (चन्द्रोदय रात्रि 8.51 P.M)
22.9.2024	रविवार	पंचमी	पंचमी श्राद्ध, सर्वार्थ सिद्धि योग
23.9.2024	सोमवार	षष्ठी	षष्ठी श्राद्ध, सर्वार्थ सिद्धि योग
24.9.2024	मंगलवार	सप्तमी	सप्तमी श्राद्ध
25.9.2024	बुधवार	अष्टमी	अष्टमी श्राद्ध, श्री दुर्गा अष्टमी
26.9.2024	गुरूवार	नवमी	नवमी श्राद्ध
27.9.2024	शुक्रवार	दशमी	दशमी श्राद्ध
28.9.2024	शनिवार	एकादशी	इंदिरा एकादशी व्रत सर्वेषाम् एकादशी श्राद्ध
29.9.2024	रविवार	द्वादशी	द्वादशी श्राद्ध
30.9.2024	सोमवार	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत, त्रयोदशी श्राद्ध
1.10.2024	मंगलवार	चतुर्दशी	चतुर्दशी श्राद्ध
2.10.2024	बुधवार	अमावस्या	देवपितृ कार्ये, अमावस्या, अमावस्या श्राद्ध, स्नान, दान, तर्पण, श्राद्ध पक्ष समापन महालया, सर्वार्थ सिद्धि योग

आश्विन– शुक्ल–पक्ष–संवत् 2081

3 अक्टूबर 2024 से 17 अक्टूबर 2024 तक

3.10.2024	गुरुवार	प्रतिपदा	शारदीय नवरात्रि व्रत, देवी पूजा प्रारम्भ, घट स्थापना, प्रातः पूजा आरती, श्री शतचण्डी महायज्ञ प्रारंभ, पाठ पारायण
4.10.2024	शुक्रवार	द्वितीया	प्रातः पूजा, आरती, पाठ पारायण
5.10.2024	शनिवार	तृतीया	प्रातः पूजा, आरती, पाठ पारायण, तुला संक्रान्ति
6.10.2024	रविवार	तृतीया	प्रातः पूजा, आरती, पाठ पारायण, सर्वार्थ सिद्धि अमृत
7.10.2024	सोमवार	पंचमी	प्रातः पूजा, आरती, पाठ पारायण
8.10.2024	मंगलवार	पंचमी	प्रातः पूजा, आरती, पाठ पारायण
9.10.2024	बुधवार	षष्ठी	प्रातः पूजा, आरती, पाठ पारायण, श्री श्री 1008 योगीराज स्वामी केशवानन्द जी महाराज का 82वाँ तिरोधान महोत्सव, श्री गुरु मंदिर में विशेष पूजा आरती, साधु ब्राह्मण सेवा
10.10.2024	गुरूवार	सप्तमी	प्रातः पूजा, आरती, पाठ पारायण
11.10.2024	शुक्रवार	अष्टमी	प्रातः पूजा, आरती, पाठ पारायण, श्री दुर्गा अष्टमी विशेष पूजा, योगिराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी जी महाराज का तिरोधान महोत्सव

सन्धि-पूजा-विशेष आरती

दिनांक-11.10.2024 शुक्रवार समय प्रातः 6:24 A.M.

12.10.2024	शनिवार	नवमी	प्रातः पूजा, आरती, महानवमी पूजा हवन, शतचण्डी महायज्ञ समापन, कुमारी पूजा, पूर्णाहुति, साधु ब्राह्मण सेवा, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, सर्वार्थ सिद्धि योग, श्री विजयादशमी प्रातः 9.30 बजे श्री श्री माँ कात्यायनी पीठ राधा बाग वृंदावन में श्री नारायण जी की सवारी का (शमी वृक्ष) शमी मण्डप में आगमन, विशेष पूजा एवं शमी वृक्ष एवं अस्त्र शस्त्र पूजन भजन कीर्तन विजय सम्मेलन, प्रसाद वितरण
13.10.2024	रविवार	दशमी	पापाकुंशा एकादशी व्रत स्मार्त
14.10.2024	सोमवार	एकादशी	पापाकुंशा एकादशी व्रत वैष्णव
14.10.2024	सोमवार	द्वादशी	क्षय
15.10.2024	मंगलवार	त्रयोदशी	सर्वार्थ सिद्धि अमृत सिद्धि योग, प्रदोष व्रत
16.10.2024	बुधवार	पूर्णिमा	शरद पूर्णिमा, शरदोत्सव, श्री श्री कात्यायनी पीठ में विशेष लक्ष्मी पूजा, आकाश दीप प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन खीर भोग, कार्तिक स्नान प्रारम्भ
17.10.2024	गुरूवार	पूर्णिमा	पूर्णिमा तुला संक्रान्ति सर्वार्थ, अमृत सिद्धि योग, कार्तिक स्नान प्रारम्भ

कार्तिक– कृष्ण–पक्ष–संवत् 2081

18 अक्टूबर 2024 से 1 नवम्बर 2024 तक

18.10.2024	शुक्रवार	प्रतिपदा	सर्वार्थ सिद्धि योग
19.10.2024	शनिवार	द्वितीया	
20.10.2024	रविवार	तृतीया	करवाचौथ चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय रात्रि 7.58 P.M)
20.10.2024	रविवार	चतुर्थी	क्षय
21.10.2024	सोमवार	पंचमी	सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग
22.10.2024	मंगलवार	षष्ठी	
23.10.2024	बुधवार	सप्तमी	
24.10.2024	गुरूवार	अष्टमी	गुरु पुष्य योग, अहोई अष्टमी पूजा, राधा कुण्ड स्नान(चन्द्रोदय रात्रि 12.18 A.M)श्री दुर्गा अष्टमी, सर्वार्थ अमृत सिद्धि योग
25.10.2024	शुक्रवार	नवमी	
26.10.2024	शनिवार	दशमी	
27.10.2024	रविवार	एकादशी	रमा एकादशी स्मार्त
28.10.2024	सोमवार	एकादशी	रमा एकादशी व्रत वैष्णव
29.10.2024	मंगलवार	द्वादशी	प्रदोष व्रत, धनतेरस, धन्वन्तरि जयन्ती
30.10.2024	बुधवार	त्रयोदशी	सर्वार्थ सिद्धि योग, नरक चतुर्दशी
31.10.2024	गुरूवार	चतुर्दशी	रूप चतुर्दशी,
1.11.2024	शुक्रवार	अमावस्या	दीपदान, दीपावली श्री महालक्ष्मी पूजा, शुभ दीपावली, श्री गणेश लक्ष्मी पूजा, श्री महाकाली पूजा देवपितृ कार्ये अमावस्या

कार्तिक– कृष्ण–पक्ष–संवत् 2081

2 नवम्बर 2024 से 15 नवम्बर 2024 तक

2.11.2024	शनिवार	प्रतिपदा	श्री गोवर्धन पूजा, श्री कात्यायनी पीठ में अन्नकूट दर्शन
3.11.2024	रविवार	द्वितीया	भाई दूज, यम द्वितीया स्नान मथुरा मे, विश्वकर्मा पूजा।
4.11.2024	सोमवार	तृतीया	सर्वार्थ सिद्धि योग
5.11.2024	मंगलवार	चतुर्थी	
6.11.2024	बुधवार	पंचमी	
7.11.2024	गुरुवार	षष्ठी	श्री सूर्य षष्ठी
8.11.2024	शुक्रवार	सप्तमी	सहस्रार्जुन जयन्ती
9.11.2024	शनिवार	अष्टमी	गोपाष्टमी, गौपूजन, श्री दुर्गा अष्टमी
10.11.2024	रविवार	नवमी	अक्षय नवमी, श्री जगत् धातृ पूजा, आँवला नवमी, मथुरा-वृन्दावन परिक्रमा
11.11.2024	सोमवार	दशमी	
12.11.2024	मंगलवार	एकादशी	देव प्रबोधिनी एकादशी व्रत सर्वेषाम्, श्री तुलसी शालिग्राम विवाह चातुर्मास व्रत पूर्ण, सर्वार्थ सिद्धि योग
13.11.2024	बुधवार	द्वादशी	प्रदोष व्रत
14.11.2024	गुरुवार	त्रयोदशी	श्री वैकुण्ठ चतुर्दशी, सर्वार्थ सिद्धि योग
14.11.2024	गुरूवार	चतुर्दशी	क्षय
15.11.2024	शुक्रवार	पूर्णिमा	व्रत पूर्णिमा, कार्तिक स्नान पूर्ण, श्री निम्बार्क जयन्ती, श्री चैतन्य महाप्रभु वृंदावन आगमन, आकाश दीप समापन

मार्गशीर्ष–कृष्ण–पक्ष–संवत् 2081

16 नवम्बर 2024 से 1 दिसम्बर 2024 तक

16.11.2024	शनिवार	प्रतिपदा	"श्री कात्यायनी माँ व्रत पूजा" आज (16.11.2024) से प्रारम्भ होकर आगामी दिवस 15.12.24 तक पूर्णिमा को समापन होगा। ब्रज गोपियों ने श्रीधाम वृंदावन में श्री श्री कात्यायनी माँ की एक माह तक पूजा अर्चना कर अपने आराध्य श्री कृष्ण जी को पति के रूप में प्राप्त किया। इस व्रत के पालन करने से मानव की समस्त मनोकामनायें पूर्ण होती हैं, वृश्चिक संक्रान्ति
17.11.2024	रविवार	द्वितीया	
18.11.2024	सोमवार	तृतीया	चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय रात्रि 7.38 P.M), सर्वार्थ अमृत सिद्धि योग
19.11.2024	मंगलवार	चतुर्थी	
20.11.2024	बुधवार	पंचमी	
21.11.2024	गुरूवार	षष्ठी	गुरू पुष्य सर्वार्थ अमृत सिद्धि योग
22.11.2024	शुक्रवार	सप्तमी	
23.11.2024	शनिवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी, श्री काल भैरव अष्टमी
24.11.2024	रविवार	नवमी	सर्वार्थ सिद्धि योग
25.11.2024	सोमवार	दशमी	
26.11.2024	मंगलवार	एकादशी	उत्पत्ति एकादशी व्रत स्मार्त
27.11.2024	बुधवार	द्वादशी	उत्पत्ति एकादशी व्रत वैष्णव
28.11.2024	गुरूवार	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
29.11.2024	शुक्रवार	चतुर्दशी	सर्वार्थ सिद्धि योग

30.11.2024	शनिवार	अमावस्या	पितृकार्ये अमावस्या
1.12.2024	रविवार	अमावस्या	देवपितृकार्ये अमावस्या

मार्गशीर्ष–शुक्ल–पक्ष–संवत् 2081

2 दिसम्बर 2024 से 15 दिसम्बर 2024 तक

2.12.2024	सोमवार	प्रतिपदा	
3.12.2024	मंगलवार	द्वितीया	
4.12.2024	बुधवार	तृतीया	
5.12.2024	गुरूवार	चतुर्थी	
6.12.2024	शुक्रवार	पंचमी	श्री विहार पंचमी, श्री बांके बिहारी जी प्राकट्य महोत्सव
7.12.2024	शनिवार	षष्ठी	
8.12.2024	रविवार	सप्तमी	
9.12.2024	सोमवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी
9.12.2024	सोमवार	नवमी	क्षय
10.12.2024	मंगलवार	दशमी	सर्वार्थ सिद्धि योग
11.12.2024	बुधवार	एकादशी	मोक्षदा एकादशी व्रत स्मार्त गीता जयन्ती
12.12.2024	गुरुवार	द्वादशी	मोक्षदा एकादशी व्रत वैष्णव
13.12.2024	शुक्रवार	त्रयोदशी	
14.12.2024	शनिवार	चतुर्दशी	
15.12.2024	रविवार	पूर्णिमा	पूर्णिमा व्रत, मार्गशीर्ष, पूर्णिमा श्री श्री कात्यायनी माँ का व्रत पूजा विधान समापन धनु संक्रान्ति

पौष–कृष्ण–पक्ष–संवत् 2081

16 दिसम्बर 2024 से 30 दिसम्बर 2024 तक

16.12.2024	सोमवार	प्रतिपदा	
17.12.2024	मंगलवार	द्वितीया	
18.12.2024	बुधवार	तृतीया	चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय रात्रि 8.30 P.M)
19.12.2024	गुरूवार	चतुर्थी	
20.12.2024	शुक्रवार	पंचमी	
21.12.2024	शनिवार	षष्ठी	
22.12.2024	रविवार	सप्तमी	सर्वार्थ सिद्धि योग
23.12.2024	सोमवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी
24.12.2024	मंगलवार	नवमी	
25.12.2024	बुधवार	दशमी	योगीराज श्री 1008 स्वामी केशवानन्द जी का आविर्भाव महोत्सव
26.12.2024	गुरूवार	एकादशी	सफला एकादशी व्रत सर्वेषाम, श्री श्री विद्यानन्द जी महाराज का आविर्भाव महोत्सव श्री गुरू मन्दिर में पूजा पाठ संकीर्तन
27.12.2024	शुक्रवार	द्वादशी	सर्वार्थ सिद्धि योग
28.12.2024	शनिवार	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
29.12.2024	रविवार	चतुर्दशी	सर्वार्थ सिद्धि योग
30.12.2024	सोमवार	अमावस्या	देवपितृ कार्ये अमावस्या, मौनी अमावस्या

पौष–शुक्ल–पक्ष–संवत् 2081

31 दिसम्बर 2024 से 13 जनवरी 2025 तक

31.12.2024	मंगलवार	प्रतिपदा	
1.1.2025	बुधवार	द्वितीया	नववर्ष 2025 सभी लोगों को सुख समृद्धि मंगलमय हो, शुभम् कल्याणम् अस्तु
2.1.2025	गुरूवार	तृतीया	
3.1.2025	शुक्रवार	चतुर्थी	
4.1.2025	शनिवार	पंचमी	
5.1.2025	रविवार	षष्ठी	सर्वार्थ सिद्धि योग
6.1.2025	सोमवार	सप्तमी	सर्वार्थ सिद्धि अमृत सिद्धि योग
7.1.2025	मंगलवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी
8.1.2025	बुधवार	नवमी	
9.1.2025	गुरूवार	दशमी	
10.1.2025	शुक्रवार	एकादशी	पुत्रदा एकादशी व्रत सर्वेषाम्
11.1.2025	शनिवार	द्वादशी	सर्वार्थ सिद्धि अमृत सिद्धि योग, प्रदोष व्रत
11.1.2025	शनिवार	त्रयोदशी	क्षय
12.1.2025	रविवार	चतुर्दशी	
13.1.2025	सोमवार	पूर्णिमा	पूर्णिमा व्रत, शाकम्भरी जयन्ती, माघ स्नान प्रारम्भ

माघ–कृष्ण–पक्ष–संवत् 2081

14 जनवरी 2025 से 29 जनवरी 2025 तक

14.1.2025	मंगलवार	प्रतिपदा	मकर संक्रान्ति पुण्य काल
15.1.2025	बुधवार	द्वितीया	
16.1.2025	गुरूवार	तृतीया	
17.1.2025	शुक्रवार	चतुर्थी	सकट चौथ (चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रि 9.10 P.M)
18.1.2025	शनिवार	पंचमी	
19.1.2025	रविवार	पंचमी	सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग
20.1.2025	सोमवार	षष्ठी	
21.1.2025	मंगलवार	सप्तमी	श्री रामानन्दाचार्य जयन्ती
22.1.2025	बुधवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी
23.1.2025	गुरूवार	नवमी	सर्वार्थ सिद्धि योग
24.1.2025	शुक्रवार	दशमी	सर्वार्थ सिद्धि योग
25.1.2025	शनिवार	एकादशी	षट्तिला एकादशी व्रत सर्वेषाम्
26.1.2025	रविवार	द्वादशी	सर्वार्थ सिद्धि योग
27.1.2025	सोमवार	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
28.1.2025	मंगलवार	चतुर्दशी	देवपितृकार्ये अमावस्या
29.1.2025	बुधवार	अमावस्या	माघी मौनी अमावस्या

माघ–शुक्ल–पक्ष–संवत् 2081

30 जनवरी 2025 से 12 फरवरी 2025 तक

30.1.2025	गुरूवार	प्रतिपदा	गुप्त नवरात्रि व्रत विधान प्रारंभ
31.1.2025	शुक्रवा	द्वितीया	
1.2.2025	शनिवार	तृतीया	
2.2.2025	रविवार	चतुर्थी	सर्वार्थ सिद्धि योग
3.2.2025	सोमवार	पंचमी	बसन्त पंचमी, श्री श्री कात्यायनी पीठ के सरस्वती मन्दिर में श्री सरस्वती देवी पूजा, उत्सव
4.2.2025	मंगलवार	षष्ठी	सर्वार्थ सिद्धि योग, श्री नर्मदा जयंती
4.2.2025	मंगलवार	सप्तमी	क्षय
5.2.2025	बुधवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी, सर्वार्थ सिद्धि अमृत सिद्धि योग
6.2.2025	गुरूवार	नवमी	गुप्त नवरात्रि व्रत विधान समापन।
7.2.2025	शुक्रवार	दशमी	
8.2.2025	शनिवार	एकादशी	जया एकादशी व्रत सर्वेषाम्
9.2.2025	रविवार	द्वादशी	श्री भीष्म द्वादशी
10.2.2025	सोमवार	त्रयोदशी	योग, प्रदोष व्रत
11.2.2025	मंगलवार	चतुर्दशी	सर्वार्थ सिद्धि योग
12.2.2025	बुधवार	पूर्णिमा	माघी पूर्णिमा, श्री श्री कात्यायनी पीठ वृंदावन में (102वां) वार्षिक पीठ महोत्सव, श्री शंकराचार्य जी का 89वां प्रतिष्ठा महोत्सव, विशेष पूजा, हवन, पाठ, प्रसाद वितरण, माघ स्नान पूर्ण, पूर्णिमा व्रत, कुंभ संक्रान्ति

फाल्गुन–कृष्ण–पक्ष–संवत् 2081

13 फरवरी 2025 से 29 फरवरी 2025 तक

13.2.2025	गुरूवार	प्रतिपदा	
14.2.2025	शुक्रवार	द्वितीया	
15.2.2025	शनिवार	तृतीया	
16.2.2025	रविवार	चतुर्थी	फाल्गुनी चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 9.38 PM.) सर्वार्थ अमृत सिद्धि योग
17.2.2025	सोमवार	पंचमी	
18.2.2025	मंगलवार	षष्ठी	
19.2.2025	बुधवार	षष्ठी	
20.2.2025	गुरूवार	सप्तमी	सर्वार्थ सिद्धि योग
21.2.2025	शुक्रवार	अष्टमी	दुर्गा अष्टमी सर्वार्थ सिद्धि योग
22.2.2025	शनिवार	नवमी	
23.2.2025	रविवार	दशमी	सर्वार्थ सिद्धि योग
24.2.2025	सोमवार	एकादशी	विजया एकादशी सर्वेषाम्
25.2.2025	मंगलवार	द्वादशी	प्रदोष व्रत
26.2.2025	बुधवार	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत, श्री महाशिवरात्रि व्रत, श्री चन्द्रशेखर महादेव जी (मातृ मंदिर), श्री केशवेश्वर महादेव जी, श्री सत्येश्वर महादेव जी, श्री रत्नेश्वर महादेव जी (गुरू मंदिर), श्री शंकरेश्वर महादेव जी (शंकराचार्य मंदिर), श्री गौरीशंकर महादेव जी (बगीची), श्री ईशानेश्वर महादेव जी (सरस्वती मंदिर) श्री नर्मदेश्वर महादेव जी (छोटे शिव जी मंदिर), हरिद्वार केशवाश्रम में श्री श्यामेश्वर महादेव जी की विशेष पूजा, रूद्राभिषेक, चतुष्प्रहर विशेष पूजा, चारों प्रहरों की विशेष आरती, रात्रि जागरण
27.2.2025	गुरूवार	चतुर्दशी	देवपितृ कार्ये अमावस्या शिव खप्पर पूजन
27.2.2025	गुरूवार	अमावस्या	क्षय

फाल्गुन–शुक्ल–पक्ष–संवत् 2081

28 फरवरी 2025 से 14 मार्च 2025 तक

28.2.2025	शुक्रवार	प्रतिपदा	श्री श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज का 74वाँ महातिरोधान उत्सव, गीता पाठ, ब्राह्मण भोजन
1.3.2025	शनिवार	द्वितीया	फुलेरा दौज
2.3.2025	रविवार	तृतीया	सर्वार्थ सिद्धि योग
3.3.2025	सोमवार	चतुर्थी	
4.3.2025	मंगलवार	पंचमी	सर्वार्थ सिद्धि योग
5.3.2025	बुधवार	षष्ठी	
6.3.2025	गुरूवार	सप्तमी	
7.3.2025	शुक्रवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी, होलाष्टक प्रारम्भ।
8.3.2025	शनिवार	नवमी	
9.3.2025	रविवार	दशमी	रवि पुष्य सर्वार्थ सिद्धि योग
10.3.2025	सोमवार	एकादशी	आमला एकादशी व्रत सर्वेषाम्
11.3.2025	मंगलवार	द्वादशी	सर्वार्थ सिद्धि योग प्रदोष व्रत
12.3.2025	बुधवार	त्रयोदशी	
13.3.2025	गुरूवार	चतुर्दशी	पूर्णिमा व्रत, होलिका दहन, श्री श्री कात्यायनी पीठ में होलिकोत्सव पूजन
14.3.2025	शुक्रवार	पूर्णिमा	पूर्णिमा, श्री चैतन्य महाप्रभु आविर्भाव महोत्सव, धुलहड़ी, होली मिलन उत्सव, मीन संक्रान्ति

चैत्र–कृष्ण–पक्ष–संवत् 2081

15 मार्च 2025 से 29 मार्च 2025 तक

15.3.2025	शनिवार	प्रतिपदा	
16.3.2025	रविवार	द्वितीया	सर्वार्थ अमृत सिद्धि योग
17.3.2025	सोमवार	तृतीया	चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय रात्रि 11.32 P.M)
18.3.2025	मंगलवार	चतुर्थी	
19.3.2025	बुधवार	पंचमी	श्री रंगपंचमी सर्वाथ अमृत सिद्धि योग
20.3.2025	गुरूवार	षष्ठी	सर्वार्थ सिद्धि योग, रवि उत्तर गोले
21.3.2025	शुक्रवार	सप्तमी	शीतला सप्तमी बासोड़ा पूजा
22.3.2025	शनिवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी, शीतला अष्टमी
23.3.2025	रविवार	नवमी	सर्वार्थ सिद्धि योग
24.3.2025	सोमवार	दशमी	श्री दशमाता व्रत, सर्वार्थ सिद्धि योग
25.3.2025	मंगलवार	एकादशी	पापमोचनी एकादशी व्रत सर्वेषाम् श्री श्री विद्यानन्द जी महाराज का पंचम महा तिरोधान महोत्सव।
26.3.2025	बुधवार	द्वादशी	पापमोचनी एकादशी व्रत वैष्णव
27.3.2025	गुरूवार	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
28.3.2025	शुक्रवार	चतुर्दशी	देवपितृ कार्ये अमावस्या
29.3.2025	शनिवार	अमावस्या	देवपितृ कार्ये अमावस्या

श्रीरस्तु

श्री सरस्वत्यष्टकम्

या सदा संस्तुता शश्वत् पुरुहूत मुखै सुरैः
शुद्ध स्फटिक संकाशा सा मां पातु सरस्वती ।। 1 ।।
वल्लकी व्यग्र हस्ता या सदा पुस्तकधारिणी
अक्ष सूत्र धरादेवी सा मां पातु सरस्वती ।। 2 ।।
आत्ममूतनया देवी भूतानुग्रहकारिणी
हंसासना हास्या युता सा मां पातु सरस्वती ।। 3 ।।
योगिनां हृदये नित्यं योगरूपेण राजते
साक्षात् योग स्वरूपा या सा मां पातु सरस्वती ।। 4।।
नोनतुय्यमाना नितरां नारदादि महर्षिभिः
ज्ञान विज्ञान रूपा या सा मां पातु सरस्वती ।। 5 ।।
प्रफुल्ल वदनाम्भोजा भुक्ति मुक्ति प्रदायिनी
भक्तानामनुरक्तानां सा मां पातु सरस्वती ।। 6 ।।
जाड्यापहा महामाया महामोह प्रणाशिनी
श्वेताम्बरधरा नित्या सा मां पातु सरस्वती ।। 7 ।।
भूषणाऽऽभूषिताङगी या वराऽभीति लसत् करा।
ईशकृष्णनताङ्घ्यूब्जा सा मा पातु सरस्वती ।। 8 ।।
सारस्वतमिदं स्तोत्रं सत्यानन्देन निर्मितम्
स्मारं स्मारं गिरं देवी वर्णिता तत् प्रसत्तये ।। 9 ।।
वृन्दारण्ये विराजन्तीम् त्वामम्ब प्रार्थये मुहुः
अन्नत्यानां नृणां बुद्धिं शुद्धां कुरु हरिप्रियाम् ।। 10 ।।
इति श्री स्वामी सत्यानन्द ब्रह्मचारि रचितं
श्री सरस्वत्यष्टकम् सम्पूर्णम्।।

श्री शिवाष्टकम्

प्रभुमीशमनीशमशेषगुणं
गुणहीनमहीश-गलाभरणम्।
रण-निर्जित-दुर्ज्जयदैत्यपुरं
प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ।। १।।
गिरिराजसुतान्वित-वामतनुं
तनु-निन्दित-राजित-कोटि विधुम्।
विधि-विष्णु-शिवस्तुत-पादयुगं
प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ।। २ ।।
शशिलाञ्छित-रञ्जत-सन्मुकुटं
कटिलम्बित-सुन्दर-कृत्तिपटम्।
सुरशैवलिनी-कृत-पूतजटं
प्रणमामिशिवं शिवल्पतरुम् ।। ३ ।।
नयनत्रय-भूषित-चारुमुखं
मुखपद्म-पराजित-कोटिविधुम्।
विधु-खण्ड-विमण्डित-भालतटं
प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ।। ४ ।।
वृषराज-निकेतनमादिगुरुं
गरलाशनमाजि विषाणधरम्।
प्रमथाधिप-सेवक-रञ्जनकं
प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ।। ७ ।।

मकरध्वज-मत्तमतंगहरं
करिचर्म्मगनाग-विबोधकरम्।
वरदाभय-शूलविषाण-धरं
प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ।। ६ ।।
जगदुद्भव-पालन-नाशकरं
कृपयैव पुनस्त्रय रूपधरम्।
प्रिय मानव-साधुजनैकगतिम्
प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ।। ७ ।।
न दत्तन्तु पुष्पं सदा पाप वित्तैः
पुनर्जन्म दुःखात् परित्राहि शम्भो।
भजतोऽखिलदुःखसमूहहरं
प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ।। ८ ।।

(शम्भो महादेव हर हर)

।। ऊँ नमः पार्वतीपरमेश्वरौ हर हर महादेव ।।

श्रीगोपालस्तोत्रम!

कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभं
नासाग्रे गजमौक्तिकं करतले वेणुः करे कंकणम्।।
सर्वांगे हरिचन्दनं सुललितं कंठे च मुक्तावलिः
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूड़ामणिः।।
फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दु वदनं बर्हावतंसप्रियं
श्रीवात्सांकमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम्।
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गो–गोपसंघावृतं
गोविन्दं कलवेणु–वादन–परं दिव्यांगभूषं भजे।।
व्याधस्याचरणं ध्रुवस्य च वयो विद्या गजेन्द्रस्य का
का जातिर्विदुरस्य यादवपतेरुग्रस्य किं पौरुषम्।
कुब्जायाः कमनीयरूपमधिकं किं तत्सुदाम्नो धनं
भक्त्या तुष्यति केवलं न च गुणै। भक्तिप्रियोमाधवः।।

भवान्यष्टकस्तोत्रम

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममास्ते
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ।। 1 ।।
भवाब्धावपारे महादुःखभीरूः
पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः।
कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ।। 2 ।।
न जानामि दानं न च ध्यानयोगं
न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमंत्रम्।
न जानामि पूजां न च न्यास योगं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ।। 3 ।।
न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।
न जानामि भक्तिं व्रतं वाऽपि मातर्
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ।। 4 ।।
कुकर्मी कुसंगी कुबुद्धिः कुदासः
कुलाचारहीनः कदाचारलीनः
कुदृष्टिः कुवाक्य–प्रबन्धः सदाहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ।। 5 ।।
प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।

न जानामि चान्यं सदाहं शरण्ये
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ।। 6 ।।
विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे
जले चानले पर्वते शत्रु–मध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा माँ प्रपाहि
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ।। 7 ।।
अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो
महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः।
विपत्तैर्प्रविष्ट प्रणष्टः सदाहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ।। 8 ।।

।। इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री शंकराचार्य्यकृतं श्री भवान्यष्टकं सम्पूर्णम्।।

(बोलो श्री कात्यायनी माई की जय)
(बोलो श्री गुरु महाराज की जय)

गुरू स्तुति

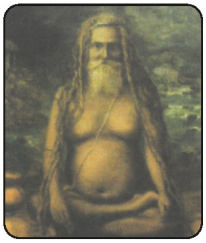

जय केशव प्यारे स्वामी जय केशव प्यारे।
भवसागर से तारो पूरन औतारे।
सत–चित–आनन्द तुम हो अचल अटल भारे।
अजर अमर निर्गुण हो कष्ट हरन हारे।।
नित्य–मुक्त निर–बन्धन असंग अविकारे।
अलख निरंजन शिव हो व्यापक भय हारे।।
अखण्ड घट घट वासी कहत वेद चारे।
जग में तुम, तुम में जग फिर जग से न्यारे।।
नित्य तृप्त कृतकृत्य हो राग द्वेष जारे।
शरणागत पतितन को ब्रह्म लोक डारे।।
अधिष्ठान हो सबके तुम अपरम्पारे।
सुख स्वरूप प्रकाश पापी खल तारे।।
स्वतन्त्र हो अविनाशी जन्म मरन टारे।
भक्त–मुक्ति के कारण बहुत रूप धारे।।

भक्त–मुक्ति जो चाहत ध्यान धरे सारे।
दृढ़ विश्वास कियो जिन सर्वक्लेश जारे।।
जिज्ञासु भक्तन के काम–क्रोध मारे।
लोभ–मोह–मद–मत्सर–छल–बल सब गारे।।
आवागवन भयानक है भुजंग कारे।
नाव भँवर में घूमें करो खेवा पारे।।
कालीचरन पुकारत जग में केशव गुण गा रे।
चरण–धूरि शिर धारो प्रेमीजन सारे।।
महा निशा में आरती निश्चय कर गा रे।
परमानन्द निरन्तर केशव पद पारे।।

श्री अम्बाजी की आरती

ऊँ जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामागौरी
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि बह्मा शिव री ।। ऊँ जय अम्बे.
माँग सिंदूर विराजत टीको मृगगद को।
उज्जवल से दोउ नैना, चद्रवदन नीको।। ऊँ जय अम्बे.
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्त–पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै ।। ऊँ जय अम्बे.
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
सुर–नर–मुनि–जन सेवत, तिनके दुःखहारी ।। ऊँ जय अम्बे.
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चंद्र दिवाकर, राजत सम ज्योति।। ऊँ जय अम्बे.
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर–घाती।
धूम्रविलोचन नैना, निशिदिन मदमाती।। ऊँ जय अम्बे.
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरें।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करें।। ऊँ जय अम्बे.
ब्रह्माणी, रुद्राणी, तुम कमलारानी।
आगम–निगम–बखानी, तुम शिव पटरानी।। ऊँ जय अम्बे.

चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरो।
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू ।। ऊँ जय अम्बे.
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुःख हरता सुख सम्पति करता।। ऊँ जय अम्बे.
भुजा चार अति शोभित, वर–अभयं धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर–नारी।। ऊँ जय अम्बे.
(श्री) अम्बेजी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत गुरुंदेव स्वामी सुख सम्पति पावे।। ऊँ जय अम्बे.

भगवान जगदीश्वर जी की आरती

ऊँ जय जगदीश हरे, प्रभु! जय जगदीश हरे।।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करें। ।। ऊँ।।
जो ध्यावे फल पावै, दुख विनशै मन का।। प्रभु.।।
सुख–सम्पति घर आवै, कष्ट मिटै तन का।। ऊँ।।
मात–पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी।। प्रभु.।।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी।। ऊँ।।
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।।प्रभू.।।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।। ऊँ।।
तुम करुणा के सागर तुम पालनकर्ता।। प्रभु.।।
मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता।। ऊँ।।
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती।। ऊँ।।
किस विधि मिलूँ दयामय! तुमको मैं कुमती।। ऊँ।।
दीनबन्धु दुःखहर्ता तुम रक्षक मेरे।। प्रभू.।।
करूणा हस्त उठाओ, द्वार पड़ा तेरे।। ऊँ ।।
विषय–विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।। प्रभु.।।
श्रद्धा–भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ।। ऊँ।।

विशेष जानकारी

वेदों और पुराणों में वर्णन है कि-

1. यदि कोई भाग्यवान भक्त नवीन मन्दिर का निर्माण करवाकर प्राचीन मन्दिरों का संस्कार या जीर्णोद्धार सेवा करता है, उसे अनन्त कोटि फल प्राप्त होते हैं।
2. मन्दिर में उत्सव तिथि विशेष में जो फूल, ध्वजा, पताका, चन्द्रताप, भोग, राग, सुगन्ध, द्रव्य, कपूर, चन्दन आदि प्रदान करता है, उसकी विपत्तियाँ तथा अनिष्ट दूर हो जाते हैं तथा जीवन सुखमय बनता है।
3. जो भक्त मंदिर में आरती के दर्शन करता है, धूप, घी, दीप आदि की व्यवस्था करता है या अखण्ड दीपदान में अपना सहयोग करता है, उसे कीर्ति तथा यश की प्राप्ति होती है और धनवान बनता है।
4. जो भक्त मन्दिरों में देव विग्रहों के समक्ष भोग लगवाकर ब्राह्मण, साधु एवं भक्तों को प्रसाद वितरण करता है, उसके जन्म–जन्मांतर के पापों एवं कष्टों का निवारण हो जाता है।
5. यदि कोई भक्त पीठ स्थान, तीर्थ, मन्दिर में गौग्रास की व्यवस्था करता है, चारा डलवाता है या पक्षियों को चूगा डलवाता है, उसके घर से सभी अमंगल दूर हो जाते हैं।
6. यदि कोई भाग्यवान भक्त विद्यालय अथवा औषधालय की सेवा करता है, उसको सुबुद्धि और भगवत्कृपा की प्राप्ति होती है।

7. विवाह के उपरान्त नवदम्पति को देवी मन्दिरों में दर्शन करवाने एवं पूजा करवाने से उनका जीवन मधुमय तथा आनन्दमय हो उठता है।
8. मन्दिरों में मर्यादा, शिष्टाचार, अनुशासन का पूर्ण पालन होना परमावश्यक है। देवता के समक्ष पैर फैलाकर बैठना, थूकना, असद्वार्ता करना, धूम्रपान करना, अशुद्ध दृष्टि रखना, घर गृहस्थी की बातें एवं अवान्तर प्रसंग करना महा अपराध है। इनसे बचना चाहिए।
9. अपना नाम प्रचार के उद्देश्य से या स्वार्थ पूर्ति हेतु, अहंकारपूर्ण सेवा निष्फल है। "सेवक धर्म कठिन मैं जाना" जिनके भाग्य में होता है वही सेवा कर सकता है।

अनमोल मोती

■

"यदि लक्ष्यहीन जीवन त्रिशंकु सा लटका रह जाएगा तो आधारहीन कल्पनामय जीवन भी कभी धरती नहीं पा सकेगा। अतः हम न तो निरुद्देश्य जीवन काटते जायें और न कोरी कल्पनाओं में ही जियें। हम अपने सर्वतोमुखी विकास का उच्चादर्श सामने रखें और साथ ही उसे यथार्थ की कसौटी पर कसते भी चलें, जिससे अपनी क्षमता एवं आवश्यकतानुसार हम पूर्व निश्चित आदर्श लक्ष्यों से हेर-फेर भी कर सकें। तभी हम व्यावहरिक सच्चे मनुष्य बन पायेंगे।"

■

संसार में कर्म तीन प्रकार के होते हैं- (i) प्रारब्ध, (ii) क्रियमाण, (iii) संचित।
(I) पूर्वजन्म में किये गये कर्म को प्रारब्ध कहते हैं वह अनायास ही भोगते हैं, (ii) क्रियमाण कर्म-वर्तमान जीवन में जो हम करते हैं उसका फल भी सद्यप्राप्ति या क्रम प्राप्ति होता है अर्थात उसका फल तत्काल भी मिल सकता है या कुछ दिन बाद भी मिल सकता है। (iii) संवित कर्म जो हम अगले जन्म के लिए संचय कर जाते हैं। यही जीवन का सार हैं। भावार्थ मनुष्य चाहे सुख भोगता है या दुःख। यह सब उसके स्वयं के ही किए कर्म का फल है।

■

मनुष्य का मन ही दर्पण है। वह जो कुछ करता है उस दर्पण के द्वारा सब कुछ देख सकता है, सुन सकता है, कह सकता है वह अपने किए हुए कर्म को दूसरों से छिपा सकता है, परन्तु अपने मन से नहीं। अतः हर मनुष्य को अपने कर्म का लेखा-जोखा स्मरण करते हुए विचार करना चाहिए कि सत् कर्म और असत् कर्म में क्या भेद है।

■

"धर्म का पालन करने के लिए मानव को नीतिवान होना चाहिए तथा जीवन-पर्यन्त..... जो कार्य करना चाहे उसे दृढ़ निश्चय एवं आत्म-विश्वास से करें। सदैव नम्र रहना चाहिए और किसी भी बात पर अभिमान नहीं करना चाहिए।'

■

मनुष्य के जीवन को धर्म प्रेरणा देता है। धर्म मनुष्य जीवन में सब कुछ को लेकर है। धर्म एक ऐसी वस्तु है जो मनुष्य जीवन के लिए सहयोगी तथा सभी क्षेत्रों के लिए प्रेरणा कारक है।

चौघड़िया

शुभ कार्य और यात्रा के लिए कोई मुहूर्त न बनने पर
उत्तम चौघड़िया देखकर कार्य एवं यात्रा करनी चाहिए।

दिन का चौघड़िया							समय	रात का चौघड़िया						
रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	दिन रात	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	६ से ७ ॥	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	७ से १ ॥	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	१ से १० ॥	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१० से १२ ॥	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१२ से १ ॥	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	१ से ३ ॥	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	३ से ४ ॥	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	४ ॥ से ६	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

उत्तम चौघड़िया– अमृत, शुभ, लाभ तथा चर ये उत्तम चौघड़िया हैं। शुभ कार्य और यात्रा के लिए कोई मुहूर्त न बनने पर उत्तम चौघड़िया देखकर कार्य करना चाहिए।

निम्न चौघड़िया– उद्वेग, रोग, काल ये निम्न चौघड़िया हैं। इन चौघड़ियों का शुभ कार्य में त्याग करना चाहिए।

रवि पुष्य योग के समय तंत्र-मंत्र की सिद्धि एवं जड़ी-बूटी ग्रहण करना उत्तम हैं। गुरु पुष्य योग में व्यापारिक कार्य एवं धन लाभ का कार्य करना विशेष रूप से सिद्धिप्रद होता है।

गच्छ गौतम शीघ्रं त्वं ग्रामेषु नगरेषु च।
आसनं भोजनं यानं सर्वं में परिकल्पय।। गौतमाय नमः

उपर्युक्त श्लोक का स्मरण करने से यात्रा सुखद एवं सफल होती है।

दिशाशूल ज्ञानार्थ चक्रम्

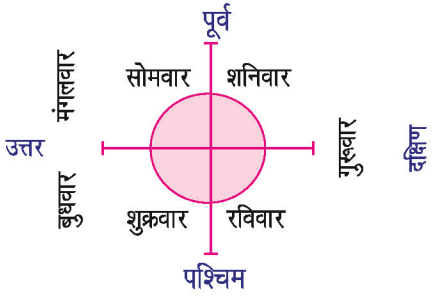

सोम शनिचर पूरब ना चालू । मंगल बुध उत्तरदिसिकालू ।।
रवि शुक्र जो पश्चिम जाय। हानि होय पथ सुख नहिं पाय।।
बीफे दक्खिन करे पयाना, फिर नहीं समझो ताको आना।।

अर्थ– सोमवार एवं शनिवार को पूरब दिशा में तथा मंगल एवं बुधवार को उत्तर दिशा में यात्रा नहीं करनी चाहिए। रविवार एवं शुक्रवार को पश्चिम दिशा में यात्रा करना सर्वदा हानिकारक है। गुरूवार के दिन तो दक्षिण दिशा में यात्रा करना अशुभ है। ये दिशाशूल कहलाते हैं।

नोट– दिशाशूल में यदि यात्रा करना आवश्यक ही हो तो निम्नांकित वस्तु खाने से यात्रा शुभ होती है।

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
वस्तु	घी	दूध	गुड़	पुष्प	दही	घी	तिल

श्रुतिस्मृति ममैवाज्ञे यस्त उल्लंघ्य वर्तते।
आज्ञोच्छेदी ममद्वेषी मद्भक्तोऽपि न वैष्णवः।।

पुराण में भगवद् वचन वेद और स्मृतियाँ (शास्त्र) मेरी ही आज्ञा हैं। जो व्यक्ति उनका उल्लंघन करके मनमाना आचरण करता है वह मेरा अपराधी तथा द्रोही है। ऐसा व्यक्ति मेरा भक्त होकर भी वास्तव में वैष्णव नहीं है।

तंत्र चूड़ामणि से संग्रहित 51 शक्तिपीठ

क्र.	स्थान	अंग तथा अंगभूषण	भैरव	शक्ति
1.	हिंगलाज (पाकिस्तान)	ब्रह्मरन्ध्र	भीमलोचन	कोट्टारी
2.	शर्कारार (महाराष्ट्र)	त्रिनेत्र	क्रोधीश	महिषमर्दनी
3.	सुगन्धा (बांग्ला देश)	नासिका	त्रियंबक	सुनंदा
4.	कश्मीरा (जम्मू और कश्मीर)	कंठदेश	त्रिसंध्येश्वर	महामाया
5.	ज्वालामुखी (हिमाचल प्रदेश)	जोह्व	उन्मत्त/वटुकेश्वर	सिद्धिदा/अंबिका
6.	जालंधरा (पंजाब)	वाम स्तन	भीषण	त्रिपुरमालिनी/त्रिपुरनाशिनी
7.	वैद्यनाथ (बिहार)	हृदय	वैद्यनाथ	जयादुर्गा
8.	नेपाला (नेपाल)	जानुद्वय	कपालि	महामाया
9.	मनसा (तिब्बत)	दक्षिण हस्त	अमर/हर	दक्षिणी
10.	उत्कला/विरजा (ओडिशा)	नाभि	जगन्नाथ	विमला/विजया
11.	गंडकी (नेपाल)	दक्षिण गंडा	चक्रपाणि	गंडकी चंडी
12.	बहुला (पश्चिम बंगाल)	वाम बाहु	भीरूका/तीव्रक	बाहुला
13.	उज्जिनी (मध्य प्रदेश)	कुरपारा	कपिलंबरा	मंगला चंडी
14.	चट्टाला (बांग्ला देश)	दक्षिण बाहु	चंद्रशेखर	भवानी
15.	त्रिपुरा (त्रिपुरा)	दक्षिण पद	त्रिपुरेश	त्रिपुरा
16.	त्रिस्त्रोत (पश्चिम बंगाल)	वाम पद	अंबरा/ऐश्वरा	ब्रह्माणी
17.	कामगिरी/कामरूप देश (असम)	महा मुद्रा/योनि	उमानंद	कामाख्या/दशमहाविद्या
18.	युगाद्य/क्षीर ग्राम (पश्चिम बंगाल)	दक्षिण पद अंगुष्ठा	क्षीरकंटक	भूतधात्री
19.	काली पीठ (पश्चिम बंगाल)	दक्षिण पद अंगुली	नकुशीला	काली
20.	प्रयाग (उत्तर प्रदेश)	हस्त अंगुली	भाव	ललिता
21.	जयंती (बांग्ला देश)	वाम जंघा	क्रमादीश्वर	जयंती
22.	किरीट (पश्चिम बंगाल)	किरीट	समवर्त्त/सिद्ध	रूप विमला/भुवनेश्वरी
23.	मणिकर्णिका/वाराणासी (उ.प्र.)	कर्णकुंडल	काल भैरव	विशालाक्षी
24.	कन्याश्रम (बांग्ला देश)	पृष्ठ	निमिष	सर्वाणी
25.	कुरूक्षेत्र (हरियाणा)	दक्षिण गुल्फा	स्थानु	सावित्री
26.	मणिवेदिका (राजस्थान)	मणिबन्ध	सर्वानंद	गायत्री
27.	श्रीशैला/श्री हट्टा (आन्ध्र प्रदेश)	ग्रीवा	संवरानंद	महालक्ष्मी
28.	कांचि (तमिलनाडु)	कंकाल	रूरू	देवगर्भा/वेदगर्भा
29.	काल माधव (असम)	वाम नितंब	अष्टांग	काली
30.	सोना (मध्य प्रदेश)	दक्षिण नितंब	भद्रसेना	नर्मदा
31.	रामगिरी/राजगिरी (उत्तर प्रदेश)	दक्षिण स्तन	चंदा	शिवानी
32.	वृन्दावन (उत्तर प्रदेश)	केश	भूतेशा/कृष्णनाथ	उमा/कात्यायनी
33.	शुचि/अनल (तमिलनाडु)	उर्ध्वा दंत पंक्ति	समाहार/समक्रूर	नारायणी
34.	पंच सागर (महाराष्ट्र)	अंधो दंत पक्ति	महारूद्र	वराही
35.	कारा टोया टाटा (बांग्ला देश)	वाम तलपा	वामन	अपर्णा
36.	श्री पर्वत (आन्ध्र प्रदेश)	दक्षिण तलपा	सुंदरानंद	सुंदरी
37.	विभासा (पश्चिम बंगाल)	वाम गल्फा	सर्वनंद	कपाली/भीमरूपा
38.	प्रभास (गुजरात)	उदर	वक्रतुंड	चंद्रभागा
39.	भैरव पर्वत (मध्य प्रदेश)	ऊर्ध्वोष्ठ	लंबकर्ण	अवंति
40.	जन स्थान (महाराष्ट्र)	चिबुका	विकृताक्ष	भ्रामरी
41.	गोदावरी तीर्थ (आन्ध्र प्रदेश)	वाम गंडा	दंडपाणि/वस्त्रनाथ	विश्वमात्रिका/राकिनी
42.	रत्नावलि (पं. बंगाल)	दक्षिण स्कंध	शिवा	कुमारी
43.	मिथिला (नेपाल)	वाम स्कंध	महोदर	उमादेवी/महादेवी
44.	नालाहट्ट (पश्चिम बंगाल)	नाल	योगीश्वर	काली
45.	कर्नाटा (कर्नाटक)	कर्ण अभिरू	जया	दुर्गा
46.	वक्रेश्वरा (पश्चिम बंगाल)	मनस	वक्रनाथ	महिषामर्दनी
47.	यशोरा (बांग्ला देश)	वाम हस्त	चंदा	यशोरेश्वरी
48.	अट्टहास (पश्चिम बंगाल)	अधरोष्ठ	विश्वेश्वर	फुल्लारा
49.	नन्दीपुरा (पश्चिम बंगाल)	कंठहार	नंदीकेश्वर	नंदिनी
50.	लंका (श्रीलंका)	नुपूर	रक्षेश्वर	इंद्राक्षी
51.	विराट (राजस्थान)	वामपद अंगुलि	अमृत	अंबिका

।। ॐ श्री गुरुवे नमः ।।

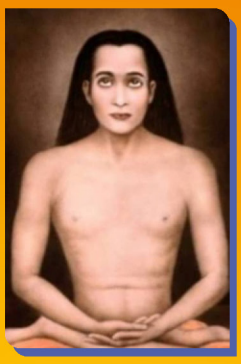

बाबा जी महाराज

स्वामी रामानन्द तीर्थ

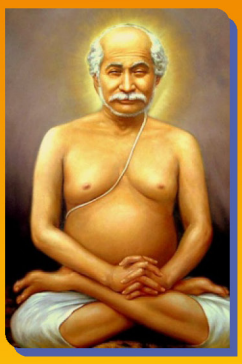

योगीराज श्यामाचरण लाहिड़ी

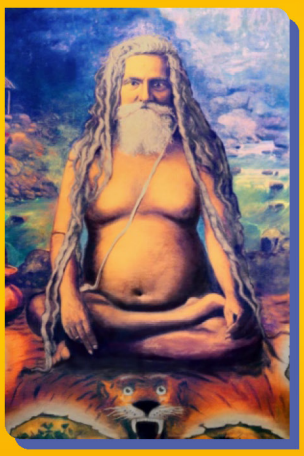

श्री श्री 1008 स्वामी केशवानन्द जी महाराज
संस्थापक श्री श्री कात्यायनी पीठ
केशवाश्रम वृन्दावन एवं केशवाश्रम हरिद्वार

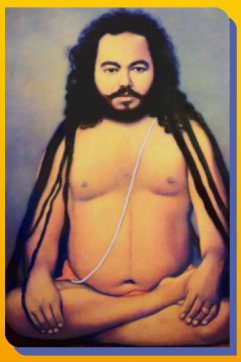

स्वामी सत्यानन्द जी

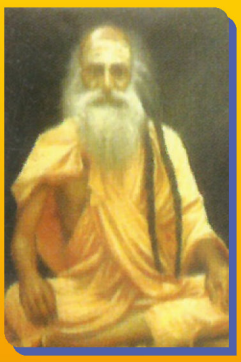

स्वामी नित्यानन्द जी

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुस्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

श्री श्री कात्यायनी पीठ, वृन्दावन

केशवाश्रम–राधाबाग, वृन्दावन–281 121 मथुरा

Tel. 0565-2442386
Website : www.katyayanipeeth.org.in
E-mail: katyayanipeeth@yahoo.com